ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

'क्या निराश हुआ जाए'

दिनांक—10/10/2020

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

प्यारे बच्चों !आप लोगों ने कहा था कि आप लोगों को हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित निबंध 'क्या निराश हुआ जाए' समझने में थोड़ी परेशानी हो रही है। आप इसे अच्छी तरह नहीं समझ पा रहे हैं ,अतः मैं इसे पुनः समझाऊँ इसलिए मैंने इस निबंध का संक्षिप्त रूप आपके समक्ष प्रस्तुत किया है, आप इसे पढ़ें व समझें।

<u>एन सी इ आर टी पर आधारित</u>
~~~~~~~~~~

क्या निराश हुआ जाए

(संक्षिप्त रूप में)

हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित 'क्या निराश हुआ जाए' एक श्रेष्ठ निबंध है। इस पाठ के द्वारा लेखक देश में उपजी सामाजिक बुराइयों के साथ-साथ अच्छाइयों को भी उजागर करने के लिए कहते हैं । वे कहते हैं समाचार पत्रों को पढ़कर लगता है, सच्चाई और ईमानदारी ख़त्म हो गई है। आज आदमी गुणी कम और दोषी अधिक दिख रहा है। आज लोगों की सच्चाई से आस्था डिगने लगी है। लेखक कहते हैं कि लोभ, मोह, काम-क्रोध आदि को शक्ति मान कर हार नहीं माननी चाहिए बल्कि उनका डट कर सामना करना चाहिए। आगे वे कहते हैं कि हमें किसी के हाथ की कठपुतली नहीं बनना चाहिए। कानून और धर्म अलग-अलग हैं। परन्तु कुछ लोग कानून को धर्म से बड़ा मानते हैं।
समाज में कुछ लोग ऐसे हैं ,जो बुराई को रस लेकर बताते हैं। बुराई में रस लेना बुरी बात है। लेखक के अनुसार सच्चाई आज भी दुनिया में है इसके कई उदहारण उन्होंने पाठ में दिया है।

लेखक आज के समय में फैले हुए डकैती ,चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार से बहुत दुखी हैं। आजकल का समाचार पत्र आदमी को आदमी पर विश्वास करने से रोकता है। लेखक के अनुसार जिस स्वतंत्र भारत

का स्वप्न गांधी, तिलक, टैगोर ने देखा था यह भारत अब उनके स्वप्नों का भारत नहीं रहा। आज के समय में ईमानदारी से कमाने वाले भूखे रह रहे हैं और धोखा धड़ी करने वाले राज कर रहे हैं।

लेखक के अनुसार भारतीय हमेशा ही संतोषी प्रवृति के रहें हैं। वे कहते हैं, आम आदमी की मौलिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कानून बनाए गए हैं किन्तु आज लोग ईमानदार नहीं रहे। भारत में कानून को धर्म माना गया है, किन्तु आज भी कानून से ऊँचा धर्म माना गया है शायद इसीलिये आज भी लोगों में ईमानदारी, सच्चाई है। लेखक को यह सोचकर अच्छा लगता है कि अभी भी लोगों में इंसानियत बाकी है उदहारण के लिए वे बस और रेलवे स्टेशन पर हुई घटना की बात बताते हैं।

इन उदाहरणों से लेखक के मन में आशा की किरण जागती है और वे कहते हैं कि अभी निराश नहीं हुआ जा सकता। लेखक ने टैगोर के एक प्रार्थना गीत का उदाहरण देकर कहा है कि जिस प्रकार उन्होंने भगवान से प्रार्थना की थी कि चाहे जीतनी विपत्ति आये वे भगवान में ध्यान लगाए रखें। लेखक को विश्वास है कि एक दिन भारत इन्हीं गुणों के बल पर वैसा ही भारत बन जायेगा जैसा वह चाहता है। अतः अभी निराश न हुआ जाय।

कुमारी पिंकी “कुसुम”